मञ्जुरस पदावली

(षट् ऋतु)

रचयिता और प्रकाशक

श्री श्रीकान्तशरण

समस्त तुलसी साहित्य पर विशद व्याख्या

(सिद्धान्त-तिलक)-कार

श्रीसद्गुरु कुटी, गोलाघाट,

श्रीअयोध्याजी

पुस्तक-भंडार, पटना ४

प्रथमावृत्ति १०००] संवत् २०१५ [निछावर १॥ न. पै.

प्राक्कथन

यह छोटा-सा ग्रन्थ 'मञ्जु-रस पदावली' समय-समय पर रचे हुए पद्यों का संग्रह है। मैं एक बार श्रीमिथिला प्रान्त मैं लौठवा स्थान पर गया था। वहाँ के महान्त श्री युगलकिशोर दासजी स्वयं पखावजी थे। अतः, वहाँ गवैयों का विशेष सम्मान रहता था। वहाँ उसी प्रान्त के एक संत बैदेही वल्लभदासजी गवैया रहते थे। उनकी विशेष प्रेरणा से उनके अन्य पदों की ताल-मात्रा के अनुसार कुछ पद रचे गये हैं। उन्हें वे नित्य स्वयं और उनके शिष्य रसिक-शिरोमणिशरणजी कंठ कर लेते थे। लगभग ४० पद उनकी प्रेरणा से बने थे। शेष स्वेच्छा से समय-समय पर रचे गये हैं।

इसमें समय-समय के उत्सवों के एवं षट्-ऋतुओं के पद हैं। विशेष कर सन्तों के और गवैयों के काम के हैं। अपनी अल्प मति के अनुसार रचे गये हैं। आशा है कि अवगुणों की उपेक्षा कर संत जन ग्रहण करेंगे।

—लेखक

मुद्रक
श्री महेन्द्रप्रसाद गुप्त
श्रीशंकर मुद्रणालय, वाराणसी

मञ्जु-रस पदावली

(षट् ऋतु)

अथ पावस ऋतु

काफी—तिताला

'आजु मन बस गई, साँवरे की, सुरतिया···' के तर्ज पर :—

सीयपिय छबि नयी, झूलने की, उर वासी रसवारी निहारी मैं आजु री जब से। गलबाँह दीन्हें सोहैं, सिय की शोभा पै बिके मोहैं लखि दुहुँ दिसि सखियाँ। झूलाझुलत दोउ गावैं मिलित स्वर, साज बजैं बहु भाँति मिला के, शोभा हेरी मंजु गई वारी ॥ —

सा नि ध ध म प नि स स सारे सारे सानी धानी पधनी स निध प ग म प गरे सा निधा निप ध म प निसा गरे सा रे रे सा निध प म ग रेसा—॥ १ ॥

संकीर्ण—तिताला

'सहेली मीलि गावो री, मंगल चार सुहाई···'-के तर्ज पर—

झुलावैं राधौ प्यारी को, झूलन कुंज सजावट बरनि न जाई। सुहाई अवध पुर सावन की सुबहार। उमड़ि घुमड़ि बादरवा छाये, गरजत लागत परम सुहाए, रिमिझिमि परत फुहार। दामिनि दमक सु दादुर बोलत, सीतसुरभि मृदु मारुत डोलत, झींगुर झनक कोकिला कूजत, चातक मोर बिहार। सजि समाज सखि साज बजावहिं, झूलन छबि पर बलि बलि जावहिं मंजु सुराग उचार ॥ २ ॥

काफी—यकताला

'गुनि गावत काफीराग, खर हर···' के तर्ज पर—

सखि झूलत सीयराम, कनक भवन झूलन गृह। सोहत घन बर्षत रिमिझिमि दामिनि चमक राज। युगल सखी सजे षोड़स, हूलति

हुलसति पुलकति, दंपति मृदु राग बदत। पावत सुख सुनि सुनि अलिगन बाजत मंजु साज ॥ ३ ॥

ध्वनि दुर्गा—झप

'दुरगा कि मूरति सुनिये चतुर श्याम।···' के तर्ज पर—

सिय राम झूलत, मनिमय झुलन कुंज। मनिमय युगल खंभ, पटुली जटित त्योहिं, अद्भूत सब साज, सखियाँ नटति मंजु ॥ ४ ॥

भूपाली—आड़ा चौताला

'भसुर वर··· ··· ···' के तर्ज पर

झूलत सिय पिय कनक भवन। गावैं सुहो सूमधुर स्वर। सब सखी, सुसजी, सुनि लखती। खंभा, डोरी, डाँड़ी, पाटा, लसै बेलना, सब बहु रँग मनि मय, सुमंजु निरखि निरतति ॥ ५ ॥

सोरठ—झप

'तेरोइ ध्यान धरत ज्ञानि करतार तुहि···' के तर्ज पर—

झूलहिं सिया सहित, राम सखियान लिये चहुँ, ओर भवना में, सौजैं हरित मये। हरितै बेलन डाँड़ि, हरितै पटा लसत, डोरि चौंधारि हरि, राजति दमान नये। आली सकल साजि, षोड़स त्यों हरित पट, झुकि झोंकि हूलैं सुगावैं, राग साज लये। झूलन में झुलावन में, नटने अलाप में, छायो हरष मंजु, सुधि अपन भूलि गये ॥ ६ ॥

देवसाक—झप

'दुर्गे दरनि दोष·····' के तर्ज पर

झूलैं झमकि राम राजीव लोचन, बायें बिराजति सजि सीयबाला ॥ लीन्हें सकल साज समुहें सखी सोहैं, उघटैं बिबिध राग बंधान ताला ॥ छायो घुमड़ि घन चपला चमक राज, पुरवाइ मारुत नभ वकुल माला ॥ वरषैं रमकि घन हुलसैं सु दम्पति, गावैं सरस राग लखि मंजु काला ॥ ७ ॥

'झन न न न न पायन वाजै, राघव की पैंजनी।···' के तर्ज पर—

सन न न न न पवन राजै, पूरब की शोभनी। झमकि झमकि

झूलति प्रीतम सँग सीय वनी सजनी। उमड़ि घुमड़ि घन बर्षत हर्षत, चमकत निशि घन दामिनी। प्यारी तन पट उड़त सँभारत, प्रीतम निज कर अति छबि छावत, मंजु निरखि छबि बलि बलि जावें, चन्द्र-कलादिक भामिनी ॥ ८ ॥

नाटक (ग़ज़ल)

'मस्त के सैदा बना दे क़ाली कमली के ओढ़न वाले।...' के तर्ज पर—

देखि ले बाँका हिंडोला, प्यारी प्रीतम हैं झूलन वाले। मनिमय पटुलिया डाँड़ी है न्यारी, युगल युगल खंभा, बेलना मनिन मयी, डोरी के साज निराले। सियकी चुनरिया पिय को उपरना, अरुझि गये हैं फुलमाले। गावैं सखियाँ, साज बजावैं, नाचहिं मंजु सम्हाले ॥ ९ ॥

कजली

आली देखोरी मनी पर्वत पै झूलन की बहार।
सावन तीज उमंग बढ़ावनि, रिमिझिमि परत फुहार ॥
हरित मनिन मय रचित हिंडोला, परा आम की डार।
बाजत वीन मृदंग झाँझ डफ़, भेरि मुचंग सितार ॥
उमँगि-उमँगि झूलत सिय रघुबर, गावत राग मलार।
दोउ दिसि झमकि झमकि सखि हूलैं, मंजु लतान मँझार ॥१०॥

कजली

हरि २ लखो सिया छबि आज पिया सँग झूलैं रे हरी।
रेशम डोरि कनक मय डाँड़ी मनिमय पटुलिया रामा,
हरि २ बिबिध रंग मणि झालरि लगीं अमूलैं रे हरी ॥ हरि० ॥
आसपास पटुली सखि राजैं सौंजैं सु धारी रामा,
हरि २ दुइ-दुइ सखी दुहूँ दिसि झूलन हूलैं रे हरी ॥ हरि० ॥
मंद मंद मुसुकात पिया लखि पुलकैं पियारी रामा,
हरि २ पिया सिया छबि देखि अपनपौ भूलैं रे हरी ॥ हरि० ॥
झूलन बिलसत हुलसत दम्पति सखियाँ रिझावैं रामा,
हरि २ मंजुलता दोउ रहैं सदा अनुकूलैं रे हरी ॥ हरि० ॥११॥

तथा

हरि २ ऐसे झूलत दोऊ बसो दृग मोरे रे हरी ।
कनक अँटा पर श्याम घटा लखि सौजैं सँवारी रामा,
हरि २ प्रेम उमंगि पधारे रुचिर हिंडोरे रे हरी ॥ हरि० ॥
श्याम गौर झूलत घन दामिनि छबि पै लजावें रामा,
हरि २ मंद-मंद हँसि काम सु रति चित चोरें रे हरी ॥ हरि० ॥
बिबिध भाँति सब साज साजि सखि गावैं सु भावैं रामा,
हरि २ कोउ-कोउ नाचि रिझावैं मोद अथोरे रे हरी ॥ हरि० ॥
छत्र चँवर कोउ ब्यजन ढुरावैं झूलैं सुहूलैं रामा,
हरि २ छबि अनूप लखि मंजु लता तृन तोरे रे हरी ॥हरि०॥१२॥

राग नट

झूलत पीय सँग सिय बाल । कनक भवन हिंडोल कुँज में दोल ललित बिसाल ॥ लाल खंभ सु डोरि डाँड़ी बेलन पटुली लाल । लाल सजि दोउ दिसि झुलावति बाल फँसि छबि जाल ॥ तकि तड़ाग तरंग रंग बिहंग कूज रसाल । श्रवण सुनि उर उमँगि झूलत डोरि करन मृनाल ॥ बजत बीन सितार झाँझ मृदंग अरु कठताल । गान करि-करि नृतति बहु सखि मंजु निरखि निहाल ॥ झू० ॥ १३ ॥

तथा

झूलत सीय पिय यक संग । हरित मनिमय दोल राजत, रचनि सकल सुढंग ॥ दुहूँ दिसि अलि गन झुलावति हरित साजि सु अंग । हरित द्रुमन लतान चहुँ दिसि बोलहिं बिबिध बिहंग ॥ उमड़ि-घुमड़ि सु मेघ गरजत बरस बूँद अभग । सरनि चहूँ दिसि कमल फूले गुँजत मंजुल भृंग ॥ आलि अवलि मलार गावति नृतति ताल अभंग । मंजु लता बिलोकि यह छबि बढ़ति उमँग तरंग ॥ १४ ॥

खेमटा

सखि झूलैं रँगीले युगल रसिया । रघुनंदन श्रीजनकनंदिनी हरित बसन भूषन सजिया ॥ हरित रंग मय दोल झुलावति हरित सिंगार सजे

सखिया ॥ सखि सब साज बजावति गावति, नटति मंजु रस मन रँगिया ॥ सखि० ॥ १५ ॥

तथा

नित बसै मन मेरे रँगीली झँकिया ॥ कनक मनिनमय दोल डोरि गहे, सिया पिया झुलत झुलावैं सखिया ॥ युगल सखी लिहें छत्र बिराजति, ब्यजन चँवर दुहुँ दिसि लसिया ॥ बहु सखि साज बजावति गावति, मंजु बिलोकति यकटकिया ॥ १६ ॥

नट

लखु श्री चतुर चुड़ामनि झुलनि । सुभग सावन मास सजनी, भलि सुमंगल रचनि ॥ लखु० ॥ हेम मनिमय खंभ पटुली डोरि डाँड़ी बेलनि । चाँदनी तानी सु छबिमय, दाम बहु रँग मनिनि ॥ खंभ दार सु द्वार बहु मह डोल चित्र सु गढ़नि । सरनि चहुँ दिसि कमल फूले मेघ रिमिझिमि झरनि ॥ मध्य सिय पिय लसत छत्रहु व्यजन चँवर सु ढुरनि । युगल-युगल सु आलि दुहुँ दिशि झमकि-झमकि सुहुलनि ॥ बिपुल अलि गावति बजावति नृतति घुरि-सुरि अँगनि । सखि समाज बिराज निरखति, मंजु बरषति फुलनि ॥ लखु० ॥ १७ ॥

पद

आजु लखो सखि छबि सावन की, हरित-हरित रँग दरसावन की ॥ हरित सुमन मनिमय बँगले की, हरित अनेक द्वार जँगले की ॥ हरित खंभ बेलन पटुली की, हरित सुरेशम डारि भली की ॥ हरित सुरघुवर जनकलली की, हरित-हरित सजि अलि अवली की ॥ श्याम गौर झूलनि सुढंग की, मिलित सु आभा हरित रंग की ॥ हरे-हरे बोलनि लाल लली की, सुनत सखिन मन मंजु छली की ॥ १८ ॥

पद

मेरे हिय बिच सिय पिय झूलो । श्रवणादिक दस हरित करन हित भक्ति वृष्टि सुखमूलो ॥ मन बुधि चित अहँकार खंभ बिच सुरति डोर रति दूला । सानुकूल संकल्प मनिन मय बसन संग अनुकूलो ॥ दया

कृपा अनुकंप सु करुना आस चहूँ सखि हूलो। अनुभव सखि समूह मुद पुलकनि गान वाद्य समतूलो ॥ युगल बिहार बहार एक रस मनन उभय दिसि तूलो। मंजु लता यह झूलनि निरखत भूलै जगत समूलो ॥ १६ ॥

बिहाग

ललन अब झूलन देहु थम्हाई। कब से झूलि रहे प्रिय प्रीतम, आवै न सिरनि घुमाई ॥ झुकि-झुकि डोर गहत कर कमलन, नैनन नींद जनाई ॥ झोंकत झुकत झमकि झकझोरत, कोमल अँग न पिर ाई॥ अति सुकुमारे दोऊ धन जीवन, लखि-लखि मंजु डेराई ॥ २० ॥

कवित्त (घनाक्षरी)

झूलन निकुंज सीय पीय को बिलोकु आली, मनिमै सुचित्र ठौर-ठौर चित्त चोरहीं ॥ महि गच काँच इव हरित कनक ढरी, खंभदार द्वार हैं अपार सब ओरहीं ॥ द्वार-द्वार परदे बिचित्र दाम मोतिन के, चित्र के विहंग लगि पौन करैं सोरहीं ॥ खंभ भौंर डोरि डाँडी पटुली लसै हरित, मंजु मध्य आलियाँ झुलावैं सिरमौरहीं ॥ २१ ॥

तथा

सुभग सरोवर हिँडोल कुंज चहूँ ओर, सेतु कमनीय सोहैं नावैं सु सजाई हैं ॥ स्वेत-स्याम नील-पीत कमल विपुल लसैं, मधुप मराल गूँजैं कूजैं मन भाई हैं ॥ तट दुहुँ हरित लतावलि वितान घने, घन-घटा छाई छबि विद्युत सुहाई हैं ॥ झींगुर झनक पिक चातक चकोर मोर, सोर मंजुरस सियपियहिं बढ़ाई हैं ॥ २२ ॥

तथा

उमड़ि घुमड़ि घन घटा घन घोर छाईं, तड़िता तड़क घन कड़क गरज्जहीं ॥ चातक चकोर मोर सोर करैं चहूँ ओर, कोकिला सु कूक मृदु झींगुर झनक्कहीं ॥ गगन बकुल पाँति बिपुल उड़ात लसैं, सीतल सुगंध मृदु मारुत झरक्कहीं ॥ हरित अवनि लसै सिय पिय मन रसै, मंजु दोल चढ़े दोउ झूलते झमक्कहीं ॥ २३

तथा

झूलत झमंकि पिया प्यारी संग झूलने में, युयल युगल छत्र चँवर बिराजहीं ॥ कमल करन गहे डोरि मृदु रेशम की, झोंकत झुकत मुख मुखनि मिलावहीं ॥ एकही सुमन माल माँहि गर मेलि दोऊ, छबि रस पियैं दृग दिये सुख पावहीं ॥ सीय की लटनि पिय कुंडल उरझि रह्यो, पिय माल सिय कर मंजु छबि छावहीं ॥ २४ ॥

तथा (सिंहावलोकन)

कारी हैं घटा उमंगि झूलो पै न हूलो वेग, फूलहू से कोटि गुना सीय सुकुमारी हैं ॥ मारी हैं मारुत झकोर झमकि झोंकन की, हीय से डेराति सिसकाति वैस वारी हैं ॥ वारी हैं सारी सहचरि समाज त्योंहीं मंजु, नेकु ना बिलोकैं आप निष्ठुराई धारी हैं ॥ धारी हैं हिये में सारी सखिया समाज आज, होरी में लेइहैं लाल कसरि निकारी हैं ॥ २५ ॥

तथा (")

कारी हैं निशा औ घन-घोर घटा घेरि आईं, दामिनी दमंकि दुरि जात छटा न्यारी हैं । न्यारी हैं सु मारुत सुगंध सीत मंद-मंद, झीन-झीन बूँदन फुहार वर्ष वारी हैं ॥ वारी हैं सुपावस बिलोकि मानो मोरन की, चातक चकोर कूजैं कोकिला सुप्यारी हैं ॥ प्यारी हैं उमंग भरी प्रीतम तयारी देखि, झूलहीं हिंडोल मंजु आलि सुक्खकारी हैं ॥ २६ ॥

शरद ऋतु

पद रास के (लावनी ठुमरी)

कैसी शरद बिमल निशि आज जी, रस रंग बढ़ाने वाली ॥ पिय कीजै रास तयारी, सजि आवैं सब सुकुमारी । सिय सहित सजैं तब साज जी, छबि रास बढ़ाने वाली ॥ कैसी० ॥ मणिमय सिंहासन साजैं, जेहि महँ अगनित दल राजैं । सखि चँवर छत्र लिये छाजैं जी, बहु व्यजन दुरानेवाली ॥ कैसी० ॥ बहु फरस अनूप बिछावैं, बहु बाजन

बिबिध धरावैं। बहु सखि तहँ तहाँ बिठावैं जी, बहु साज बजाने वाली॥ कोउ ताल मृदंग बजावैं कोउ हरमुनियम दरसावैं। कोउ बीन सितार मिलावैं जी, इसराज बजानेवाली॥ हिलिमिलि अनेक सुर बाजैं, सखि गावैं मधुर अवाजैं। गति निरतति थिरकति राजैं जी, सखि नव गयंद गति वाली॥ सुर कन्या अरु नर कन्या, गंधर्व सुकन्या धन्या। गुझ कन्या यक्षनकन्या जी, बहु अहिकन्या नृतवाली॥ निज टोल-टोल मिलि आवैं बहु हाव-भाव दरसावैं। सब ग्रीवाँ कर चमकावैं जी, मुख चंद नचाने वाली॥ कोउ केकी गति दरसावैं, कोउ पारावति गति लावैं। पिय सिय युत मृदु मुसुकावैं जी, लखि मंजुलता बलि जावैं॥ १॥

तथा

(लावनी-ठुमरी)

इनको मत जानो सुकुमार इनमें भरी बीरता भारी....., के तर्ज पर।

देखो सेत सरद निसि आज प्यारे कीजै रास बिहार॥ सेत असोक बिपिन मंडप छत सेत सुभग आगार। सेत चाँदनी झीनी ताने सेत सुझालरदार॥देखो०॥ सेत मनिनमय खंभ रचित चहुँ ओर अनेक दुवार। सेत सुवन्दनवार लगावैं सेत सुफरस सुढार॥ सेत साज सब सियतन साजो सिय निज करन तुम्हार। सेत-सेत सखि भूषन साजैं सेत सकल सिंगार॥ सेत-सेत सब बाजन बाजैं सेत सुराग उचार। मंजुलता हिलि-मिलि सखि नाचैं करैं अनंद अपार॥ २॥

पद

(ठमका थियेटर तिताला)

पिय रजनी देखो कैसी लसति उँजियार सी॥ सजि नव सप्त सकल मृग नैनी, बाज साज लीन्हें अलि श्रेनी, राजति गावति कोकिल बैनी चहुँ दिसि सब सुकुमार सी॥ सुनि अवलोकि रास छबि अनुपम, रास हेतु अनुराग नहीं कम, सिय समेत पिय लसत मनोरम, सखि भइँ मंडलकार सी॥ मोर हंस सारस पारावति, गजगामिनि बहु गति दरसावति, कर मटकावति कटि लच कावति बहु सखि गेंद

उछारसी ॥ चक्राकारनटति सखि डोलति, बिबिध राग मिलि यक स्वर बोलति, सिय पिय लसत ताल कर तोरति मंजुलता बलिहार सी ॥ ३ ॥

पद

देखो कैसी सरद निसि चाँदनियाँ ॥ रास रमत असोकवन छतपर सिय पिय युत बहु कामिनियाँ ॥ श्वेत विभूषन बसन सजे जस नखतन युत घनदामिनियाँ । बाजत बीन मृदंग चंग बहु ताल मँजीर सरंगिनियाँ ॥ पारावत मराल केकी गति दरसावति गज गामिनियाँ ॥ चक्राकारसुमंडल करि सब नटत बदत बहु रागिनियाँ । चढ़ी विमाननि यकटक निरखति बरषि सुमन सुर भामिनियाँ ॥ मंजुलता सचु सँचति सु याँचति अचल रहै सुख यामिनियाँ ॥ ४ ॥

बिहाग

शरद निशि राजत कनक अँटारी । रघुनंदन श्रीजनक नंदिनी संग लिये बहु वारी ॥ स्वेत चाँदनी छटा निरखि पिय स्वेत पोसाक सँवारी ॥ स्वेत पाग अरु स्वेत उपरना धोती स्वेत सुधारी ॥ तैसहि वाम भाग वर राजति प्रीतम इव सजि प्यारी ॥ स्वेतमनिन के स्वेत बिभूषन स्वेत लसे तन सारी ॥ चंद्रकला रुख युगल प्रिया लखि निज मृदंग करधारी ॥ हेमलता सखि बीन लिये कर प्रीतिलता करतारी ॥ युगल बिहारिनि उमँगि-उमँगि उर नटति बिबिध गति न्यारी ॥ मंजुलता अवलोकि रास छबि हुलसि सु राग उचारी ॥ ५ ॥

पद

लखत सखि बिजय दसहरा आज । रघुनन्दन श्रीजनकनंदिनी नीलपति सजि साज ॥ कनक भवन यक नवल कुंज अति मनिमय धवल बिराज । सुभग सिंहासन राजत दम्पति निरखत सखिन समाज ॥ कनक पींजरन नीलकंठ लिये अलि गन सहित सुनाज । दरसावति दम्पतिहिं रिझावति गावति मधुर अवाज ॥ कनक थार मनि मानिक रोचन दूब दधी अरु लाज । मंजु सुमंगल साजि दिखावति छबि लखि रतिपति लाज ॥६॥

श्रीहनुमान्‌जी की बधाई

आज् असित कातिक तिथि चौदसि जनम अंजनी लाल लये। सिय रघुवर रुख पाय सुपरिकर साजत साज निहाल भये॥ अवध नगर ध्वज कनक कलस बहु द्वारन वन्दनवार नये। कनक भवन सुनि सरस बधावन गह-गह् नगर निसान ह्ये॥ नाचत नभ सुर नारि विमाननि किन्नर अमरनि सुमन बये। अँतर अबीर अरगजा केसरि छिरकत वीथिन कीच कये॥ यूथ-यूथ मिलि-मिलि तिय गावति आवति मंगल थार ठये। सुनि मनि बसन निछावरि करि-करि सिय-पिय देत उछाह रये॥ गायक सूत सुवंस प्रसंसक बंदिन बाँकुर विरद बये। बिबिध भाँति गति ताल देखावत नाचि रहे नट नागर ये॥ नाउनि वारिनि दर्जिनि मालिनि निज-निज सौंजनि राजत ये। मंजुलता लहि दान सुनेगिन फेरि न दूसर द्वार गये॥७॥

तथा

बाजत अनँद बधैया हो कपि केसरी के द्वार॥ रानी अंजनी के लाला जनम लये, नाउनि खबरि जनैया हो, कपि०॥ दधि दूर्वा रोचन दल फल युत, चलो सखि थार सजैया हो, कपि०॥ मंजुलता सब लहत निछावरि, देत असीस अघैया हो, कपि०॥८॥

तथा

बाजै-बाजै री बधाई बाजै-बाजै। कातिक मास असित तिथि चौदसि मंगल दिन सुभ आजै॥ उमँगि-उमँगि सिय पिय कहैं अनुगनि रचहु सुमंगल साजै॥ बर्बगाँठि हनुमंत लाल को नौवति ज्यों घन गाजै॥ सुभग सुआसिनि सोहिल गावति हिलि मिलि मधुर अवाजै॥ देत निछावरि उमँगि-उमँगि उर मंजुलता शुभ काजै॥९॥

तथा

अवध पुरी में वधैया बाजै॥ परम उछाह सिया रघुवर के बरष गाँठि कपिराजै॥ बंदनवार पताका केतुन मंगल साज बिराजै॥ नाऊ

वारी भाँट सुढाढ़िनि मालिनि झगरति राजै ॥ मंजु निछावरि पाय असीसत हनुमत उमरि दराजै ॥१०॥

तथा

अंजनि तेरो चिरजीवै ललनवाँ। नेगी नेग योग हित मचलत लेइहौं री माई तेरो तन को गहनवाँ ॥ लाली झँगुली लिहें दरजिनि माँगति, देइहौं तबहिं जब पइहौं कँगनवाँ ॥ नाउनि हार पाय चली विहँसति, भाटिनि लहि नथ जटित नगनवाँ ॥ याचक सकल अयाचक कीन्हें, मंजुलता पुनि भरोइ अँगनवाँ ॥११॥

रागिनी हमीर-ध्रुपद

'सघन वन वंक···' के तर्ज पर

जनक पुर राम लखन, बिहार हेतु सखि आए। रूप मये मोहि लये, लोगन सबही सराहत। चलो आलि मिलि अवलोकैं, यह लाभ भूरि जानि, लतामंजु भली-भाँति, तन मन वारत सो लाहत ॥१२॥

गजल

'लता ओट तब सखिन लखाये।···' के पूर्व प्रसंग पर—

छिपे जाके कहाँ प्यारे झलक अपनी दिखा देते। वो शोभामय वदन गुलशन तनक दिलवर खिला देते ॥ वो बाँके नैन रतनारे खिले मनो कमल अरुनारे। जुल्फ लता में सुमन गुच्छे गुँथे दिखला जिला देते ॥ लुनाई मंद मुसकन की सुहाई तुंडि दाड़िम की। मनो बेला कली नासामनी हलती मज़ा देते ॥ कनक वर फूल मद भारे हलत कुंडल कहर दारे। सु उर भूषन खिले मानो गुलाबों को लजा देते ॥ कमल दल पंच के युग ज्यों सनालें राजतीं भुज त्यों। ललित लता मंजु से आकर मेरी अरमां पुरा देते ॥१३॥

हिम ऋतु

बधाई श्रीप्रसादजी की

माई बजत बंध आज रे ॥ मारग शिर-कुज वार अष्टमी योग

लगन सुभ साज रे ॥ श्रीप्रसाद वपु धारि प्रगट भये सखितन श्रीकपि-राज रे ॥ नाँदी मुख जातक सु बेद-बिधि करवावत द्विजराज रे ॥ मंजुलता सब लहत निछावर भूषन पट पुखराज रे ॥ १ ॥

तथा

अवध पुर नौबत धुनि सरसानी ॥ श्रीप्रसाद की वर्ष गाँठि दिन आजु महल महँ ठानी ॥ भूषन बसन निछावरि बाँटत सिय रघुवर मन मानी ॥ झुंड झुंड मिलि सुभग सुआसिनि गावति मंगल बानी ॥ मंजुलता सुर गगन सुमन झरि जय जयकार बखानी ॥ २ ॥

ठुमरी-तिताला

'छोड़ि दे लँगर मोरि बहियाँ परूँ मैं पइयाँ,...' के तर्ज पर—

देखि लो सुघर सिय सैयाँ, सुनोरी गुइयाँ—(स्थायी)। (अंतरा—)-माँड़व तर सोहै, माथै पै मौर मोहे जोहे पोहै, सबही को, साँची री मोरी नइयाँ। (संचार—)-लाभ लेवो, लेवोरी, लेवो न चूको, देखि-सँवरवा, बनरवा। (आभोग—)-याकी शोभा पै मन को, भली रुचि वारो वारो, आली जग नाते छाँड़ो, मंजु करो हिये ध्यावो ॥ ३ ॥

शिशिर ऋतु

पद

खेलन चलिये फाग री सखी फागुन आयो ॥ लै लै करन कनक पिचकारी उमँमि उमँगि अनुराग री सिया पियहिं बुलायो ॥ अबिर गुलाल गुलाब अरगजा अँतर सजो रस पाग री करियो मन भायो ॥ श्याम कपोलन पै दै रोरी जान न पावैं भाग री धरि नारि बनायो ॥ नख सिख सुभग सिंगार सजायो भूषन बसन विभाग री धरि नाच नचायो ॥ हा हा कराये विना नहिं छाड़ब मंजुलता तजि राग री पिय हारि भषायो ॥ १ ॥

तथा

खेलि रहे रँग फाग रा दाऊ रस मतवारे। उत पिय इत सिय

टोल सजाये आरि बढ़ी जय लागि री तन सुरति बिसारे ॥ अबिर गुलालन ढेर दोऊ दिसि अँतर गुलाब तड़ाग री दोउ दोउन प्रचारे ॥ उड़त गुलाल लाल मानो बादर पिचकन चमकन लाग री रँग बरषन हारे ॥ बीन मृदंग झाँझ डफ बाजत गाइ-गाइ बहु राग री जय-जयति पुकारे ॥ जोर उमंग बिलोकि सिया दिशि पिय दल भागन लाग री लता मंजु निहारे ॥ खे० ॥ २ ॥

तथा

होरी खेलैं रँगीले युगल रसिया । सिय पिय सखिन समेत सजे दल रँग झेलत मृदु-मृदु हँसिया ॥ धाइ-धाइ रँग मलत कपोलन गाइ-गाइ रसमय बतिया ॥ सजि-सजि स्वाँग बिदूषक बनि-बनि अँग मटकावति अति लसिया ॥ पियहिँ पकरि हँसि हारि भषावति मंजु लता सखि रस रसिया ॥ ३ ॥

तथा

सिय सँग होरी खेलैं नवल रसिया ॥ सिय नवनागरि पिय गुन आगर तैसहिं नवल सुघर सखिया ॥ रतन जटित पिचकारि लिये कर रँग झेलैं सिय तन तकिया ॥ चपल चातुरी करि सिय पिय गहि श्याम कपोल लाल रँगिया ॥ बिपुल सखी गहि हारि भषाव मंजुलता अनुपम झँकिया ॥ ४ ॥

काफी

नवल पिया सँग खेलहु होरी ॥ चन्द्रकला तुम पठइ एक सखि पियहिं सँदेस कहो री, आज़ फाग सरयू तट होइहैं, आपनि टोल सजो री, इतै सजी हैं, सब गोरी ॥ तुरत जाय सखि पियहिं जनायो पिय हँसि साजि चलो री, अबिर गुलालन भार लिये बहु, संग सखा बहुतोरी, चले सँग लै रँग झोरी ॥ होरी-होरी करत सखा सब धाये इत सिय सैन दियो री, धाइ चलीं सखी झुंड करोरिन, पिचकन मार करोरी, उभय दिसि आरि परो री ॥ अबिर गुलाल कुंकुमा रोरी उड़ि भयो मेघ नयो री, बहुतक सखा पकरि लियो सखियन, बहु सखि सखन

धरो री, उभय दिसि भइ झकझोरी ॥ बहुत सखी लखि चन्द्रकला रुख सखिन छोड़ावन दौरी, पियहु चले सँग लीन्हें सखा बहु, पैठत सखिन-धरो री, चली नहिं कछु बरजोरी ॥ मंजुलता सिय के ढिंग में गहि बहु सखि करत ठठोरी, काह भई पहिली मनुसाई, हारि भषाय हँसोरी, कह्यो जब जयति किशोरी ॥ नवल० ॥ ५ ॥

वसन्त ऋतु

बधाई

ख्याल-काफी-तिताला

'तेरी दया है अपार··· ' के तर्ज पर—

बाजै बधाई सु द्वार नृपति के, सुंदर भवन वर,
नर नारी सुमँगल सजे थार, कंचन के सँवार ॥
गावैं गीत मनोहर जय जय, शब्द उचारैं, निव-

सीय

छावरि करि मंजु निहार, राम छबि पै निसार ॥१॥

राग काफी-यकताला

'गुनि गावत काफी राग··· ' के तर्ज पर—

सखि $\frac{\text{सीय लली}}{\text{राम लला}}$ को जन्म, दिन सुख प्रद गावहु मिलि, $\frac{\text{मिथिला}}{\text{कोसल पुर}}$
आनँद घर-घर, मंगल साज भ्राज। बहुत दिनों पर भागहुँ, मोर उदय जानि सफलु, वाचहुँ गुन मधुर बरनि। थालन सजि मंगलदल फल, रोचन मंजु लाज ॥२॥

नागेश्वरी-झप

'पनियाँ भरन कैसे जाऊँ सखी री, मैं तो-' के तर्ज पर—

सखियाँ सकल मीलि गाओ बधाई आज। कौशलपती के भवन भयो सुवन आज। चौथे पने गूरु विप्र की सुआशीष, राज अचल भयो मंजु सुकुल ईस, सौहौं भयल आज ॥३॥

रागिणी-देवसाक—झप

'दुर्गे दरनि देवि... ' के तर्ज पर—

सीता / राघव जनम आज नौमी सुहावनि माधव सिता / शुकला चैत योग लग्न जुरैया।
निमि / रघु राज के कुल कैरव बिपिन लागि, नखत सखिन / सखन युत जन्मी / जन्मे
जुन्हैया ॥ जात करम करि मुदित जनक राज / अवज राज, दीन्हें बिबिध दान बाजै
बधैया। सोभा सुलक्षण गावैं लखे जिन, कीजै दरस मंजु लीजै बलैया॥४॥

घाँटो (चैता)

खुश रहैं चारों ललनवाँ, हो रामा महारानी जू।
मैं ढाढ़िनि बड़ि दूर से आई, सुनि लालन सुलछनवाँ॥
गाऊँ बजाऊँ भाव बताऊँ, जानूँ बिचित्र नचनवाँ।
आयसु पाऊँ बलि-बलि जाऊँ, दरसाऊँ निज गुनवाँ॥
मंजुलता कछु और न चाहौं, फक़त ललन दरसनवाँ॥ ५॥

गज़ल—तिताला

चलो सखि आज मिथिला में बधाई है बधाई है॥
जनक नृप योग जप कीन्हा, दान बहु द्विजन को दीन्हा,
सुकृत सोई वेलि तनया दै फुलाई है फुलाई है॥
नगर नर नारि आनँद में मगन हैं साजते मंगल,
पुरी ध्वज कलस तोरन से सुहाई है सुहाई है॥
नृपति दियो हेम गौ हीरा बाजि गज बसन औ भूषन,
असीसैं मंजु ईश्वर से मनाई है मनाई है॥ ६॥

तथा

सुनैना लाड़िली तेरी मुबारक हो मुबारक हो। बहुत दिन से रही आसा, मेरी मिथिला में मंगल की, पुराई आज विधना ने, मुवा० २॥
पताका केतु औ तोरन, कलश साजे नगर भर में, पुराई चौक गलियों

में, मु० २ ॥ सुआसिन बृन्द सजि-सजि थाल दल फल दूब दधि रोचन, सुमंमल गावती आवैं, मुवा० २ ॥ उदय भयो भाग हम सब को, मंजु मन भावतो पावैं, मनावैं ईश पै निशि दिन, मुवा० २ ॥ ७ ॥

श्री चन्द्रकला जी की वधाई

आजु सुमंगल साज चहूँ दिसि, जनक नगर सरसाई। चन्द्रभानु को सुकृत कलपतरु, फलन सु औसर पाई ॥ ब्योम बिमाननि देव बिराजत, ब्रह्मादिक समुदाई। चंद्रप्रभा की कोखि सराहत, उमँगि सुमन झरि लाई ॥ माधव सुकुल पुनीत सु चौदसि, मध्य दिवस सुखदाई। अभिजित स्वाति नछत्र परम सुभ, सब सु योग यक ठाँई ॥ कुँवरि सुलक्षण धाम प्रगट भइ, रवि-शशि कांति लजाई। करि बिधान मुनि जातकरम अरु, नाँदी 'मञ्जु' कराई ॥ ८ ॥

आसावरी

आजु रसीली बजत बधाई। वर्षगांठि श्री चन्द्रकला की, निरखहु सखी अघाई ॥ सिय रघुवर रुष पाय सु परिकर, मंगल साज सजाई। गृह गृह बंदनवार कलस सजि, सफल कदलि चहुँ घाँई ॥ दधि दुर्वा रोचन तुलसी दल, फल बहु पुष्प बनाई। सजि-सजि थार चहूँ दिसि ते अलि, प्रविसहिं मंगल गाई ॥ उड़हिं अबीर अरगजा छिरकहिं, बाजन बिपुल बजाई। मंजु निछावरि देत सिया पिय, अलि निरतति हरषाई ॥ ९ ॥

(ग़ज़ल)

क्या रँगीली रस भरी बजती बधाई आज है। जनक पुर घर-घर चहूँ दिसि सुभग मंगल साज है ॥ नटनि बाजनि कल अवाजनि मोर घन पिक लाज है। भाट नट बहुरूपिया ढाढ़ी दिखावैं नाज है ॥ देत न्यवछावर लली की चन्द्रभान सुराज है। पाय मंजु अशीषहीं सब लली उमरदराज है ॥ १० ॥

तथा

बधाई बजि रही प्यारी, लखो सखि आजु मिथिला में। चन्द्रप्रभा

ने सुता जायो, भुवन सब मोद सरसायो, निराली साज मंगल की, लखो० ॥ नृपति ससिभानु के द्वारे, खड़े श्रुति बंदि बपु धारे, विरद कहैं लहैं न्यवछावर, लखो० ॥ जुरीं गुन आगरी नटिनी, सु नाइनि मालिनी भँटिनी, पाय मन भाय आशीषैं, लखो० ॥ देखि कर आगमी भाषैं, चंन्द्रकला के सु गुन लाखैं, मंजु कहैं सहचरी सिय की लखो० ॥ ११ ॥

घनाक्षरी

"कोकिला"

कोकिला सु संयम औ नेम को विभंजि वेगि, योगी औ यती को बरजोरी मन खींचिला ॥ खींचिला मनोज को सु वाटिका बहारन में, पीरे पीरे सौरभके वौरन पै बैठिला ॥ बैठिला सुकूकि कूकि सुख रसालन सों, विरही तियान को सँचारै हिया हूकिला ॥ हूकिला सु प्रोषित नायकहूँ हिये में मंजु, सोभनी बसंत की दुलारी प्यारी-कोकिला ॥१२॥

ग्रीष्म ऋतु

पद

पिया प्यारी फुलमाला बनावैं। सजि सजि डलियाँ गुलाबों की कलियाँ, चहुँ दिसि अलियाँ सुहावैं ॥ बिबिध रंग कलियों की पुतलियाँ, चित्र बिचित्र सजावैं ॥ पिय प्यारी उर प्यारी पिय उर, उमँगि उमँगि पहिरावै ॥ दिर्घादरस बिलोकि मगन दोऊ, मंजुलाता बलि जावैं ॥ १ ॥

पद

आजु लखत जल यंत्र चहूँ दिसि, पिय प्यारी गल बाँह धरे ॥ फुल बँगले मधि लसत सिंहासन, राजत सुमन सिंगार करे ॥ यक सत दुइ सत धार हजारन यंत्र अनेकन वारि झरे ॥ सखिगन गावति नाचति बहुविधि, बजत मृदंग सुनाद भरे ॥ गरजनि नाद यंत्र जल बरषनि, बारिद पिय सिय तड़ित दुरे ॥ अस अनुमानि मयूर बिबिध बिधि, नाचत मंजु बिनोद ढरे ॥ २ ॥

पद

आजु सुमन बँगले पिय प्यारी, चौपड़ खेलत रंग भरे ॥ मनि मय चौकी पर दोउ राजत, बाजी निजनिज भाव धरे ॥ हाव भाव करि करि बहु दावैं, झेलि रहे दोउ जंग अरे ॥ सखि गन गावति साज बजावति, सुनि सुनि अधिक उमंग करे ॥ मंजुलता सिय जीत मनावति सेवति चरन सुढंग ढरे ॥ ३॥

विविध पदावली

ईमन-धमार

'मतवारो ठाढ़ो गैल माँझ·····' के तर्ज पर—

मिलि आली गावो राम रूप अब। नख शिख की छबि निरखु री सजनी, तन मन धन वारो लखि अनूप अब। येहि छबि की रति काग की सुधरी, शिव निरखत प्यारो मंजु भूप अब ॥ १ ॥

खम्माच-यकताला

'लपटि झपटि मोहन गरे लगावे····' के तर्ज पर—

निरखि निरखि राघव मुख शोभापै, मैं वारी आली। ऐसी जादू मारी, जग में और ना सुहाई ॥ दृग में बसति मन में रसति, साँवरी छटा री, मुकुट शिरसि तिलक झलक, कुँडल हलनि निरखो री गोरी, मंजु क्यों फँसाई ॥ २ ॥

भूपाली-तिताला

'तुम हमसे जनि बोलो पियर वा·····' के तर्ज पर—

दुखियन पै तुम कीन्हीं सु करुना। वेदन के बचन, सुझावत हैं, चुप हो रहे मम वा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र। गीध अजामिल गनिकहि तारत, लागीं वार न प्रभु जी तोरे, कृपया मंजु करो पा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र ॥ ३ ॥

नागेश्वरी-झप

'पनियाँ भरन कैसे जाऊँ····' के तर्ज पर—

करुणा दृगन राम क्यों हूँ निहारो, मोको। मोसे पतित पै सम्हारो विरद, मोको। तोसों न दयालु प्रभु देख्यों तिलोकहुँ, भव भय डरयो मंजु आयो शरण तेरे, कीजे ग्रहण, मोको ॥ ४ ॥

रागिणी देवसाक-झप

'दुर्गे दरनि देवि·····' के तर्ज पर

सीता रमण राम कारुण्य लोचन, पतित उधारण, करु देव दाया। गुह राव पालन, खगराज तारण, शवरी सुगति दीन्हें, श्रुति संत गाया ॥ सुग्रीव रक्षण, बाली दलन कीन्हें, तेरी कृपा कोर, हनुमान पाया ॥ लंकनाथ विभीषण कीन्हें शरण आए, फैलो सुयश तेरो, सुनि मंजु आया ॥ ५ ॥

राग वसन्त ऋ० को० म० दोनों ताल झप, प० वर्जित

'जालिम अजब एक योगी युगुतिवारो···' के तर्ज पर—

मारुत सुवन बीर बाँको विरद वारो, श्री राम अनुचर लसै देह लाला। पिंगल वरण नैन भृकुटी कुटिल सोहै, केहरि ठवनि बज्र हनु लूम वाला ॥ लाँघ्यो जलधि सोधि सिय की खवरि लाये, सौमित्रि के प्राण राखे कृपाला। कीन्हें अभय देव मुनि बाहु के बल, भव भय डरयो मंजु दृग कोर पाला ॥ ६ ॥

जाजवन्ति-धमार

'मोद भयो सुख भयो त्रिभुवन में, प्रगट ललन···' के तर्ज पर—

छोह मये सुख मये कर कमलहि, मम दुःख लखि केहुँ विधि शिर धर ए। जेहि कर छाहें बचे जन आरत, सब बिधि सुख लहे जिन्ह ताके तर ए। कपि पति पाणि गहे शिर नावत, दशमुख अनुज सलिल टीका कर ए। मंजु निहारि छाँह बिरुदावलि, गावत गुन गन भव भय हर ए ॥ ७ ॥

खम्माच—आड़ा चौताला

'सब सखिया मिलि खम्माच गाओ।...' के तर्ज पर—

सिय पिय की छबि पै वारि जाओ। दिये गलबाहीं दोउ, छत्र सजाओ। आलीगन की, ओर लखत, मंजु की ओर मधुर मुसुकाओ॥ ८॥

भैरवी—तिताला

'मोहन तोरी बंसी हां ये री हां रे।...' के तर्ज पर—

सिया पिया जागो हाँ ये री हाँ रे। सिया पिय-उडुगन फीके भये रवि, उदय कमल विकसाय। बीन सु नूपुर धुनि अलि गावत, मंजु सहित समुदाय॥ ९॥

गजल—तिताला

'कदम डारि मोरि सारी अटकि रही कैसे के झूलौ....' के तर्ज पर—

सिय पिय छबि अवलोकु सखी कसि सरस रहस्य मोहनियाँ-राम॥ पिय के कपोलन पै अलक बिखरि रहीं, पान बीरी युत मुसकनियाँ-राम। सरस सयन किये नयन परस्पर, मृदु तिरछी चितवनियाँ-राम॥ १॥ दिये गल बाँह पिया प्यारी दोउ, मधुर सरस बतरनियाँ राम। हाव भाव भरे प्रीति रीति रँगे, कर सिय चिबुक छुवनियाँ-राम॥ २॥ ह्वै निहाल सिय मुख मयंक पर, छिन छिन वारैं अपनियाँ-राम। मंजु मुदित सखि निरखि सदा, पिय प्यारी बिबस रहनियाँ-राम॥३॥१०॥

पद

बने दोऊ कैसी गेदैं उछारैं। कर कमलनि बहु रंग सु झेलत, यक यक बार हजारैं॥ अति लाघव लखि पिय की उछारनि, सिया जू निमेष न टारैं॥ चपल सुझेलनि मुरनि दुरनि सिय, लखि पिय तन मन वारैं॥ मंजुलता दोउ दिसि अलि बरषति, सुरतरु सुमन अपारैं॥ ११॥

कहरवा

अब भई भिनुसरवा जागु पिया हे॥ जागु जागु जागु लखु अरुण चिराग, भइ बहुत अवेर वा, जागु पिया हे॥ अरुण उदित कब सन

लोही लाग, भइ मलिन सितरवा, जागु० ॥ पढ़त भाँट गुन गावत सु जाग, भइ भीर दुवरवा, जागु० ॥ पुरजन जुरत जोहार भेंट लाग, भइ गुरु जन बेरवा, जागु० ॥ सिय सिय पिय पिय रटन सु लाग, कइ सारिक पिंजरवा, जागु० ॥ साज बजावें सखि सजि विभाग, भइ पलँग अगरवा, जागु० ॥ मंजुलता सखि ललित राग, नइ बदति कहरवा, जागु० ॥ १२ ॥

पद

सिय पिय प्रान पियर वा, हो जागिये भये भोर वा ॥ अरुनाई छाई प्राची दिशि, मंद परन लागे तर वा, हो जा० ॥ सुनिये पौरि गुनी जन गावत, भैरव राग कहरवा, हो जा० ॥ सरन सरोरुह बिकसत निरखहु, सुनहुँ भँवर गुंजर वा, हो जा० ॥ जागि महल बासिन सुख दीजै, मंजु प्रिया उर हरवा, हो जा० ॥ १३ ॥

लावनी रंगत वशीकरण ताल कव्वाली

'बिनु काज आज महाराज'''दुख हरहु द्वारिका नाथ''''' के तर्ज पर'—

सहचरि करि-करि प्रतिवाद युगल यश गावैं। सिय-राम-नाम-गुण गाय सबहि हरषावैं ॥ पिय नाम सकल श्रुति सार उदार अघारी। अति पावन, मुनिमन भावन, जन-हितकारी ॥ वह धर्म-कल्पतरु बहुरि दिव्य गुणदाई। अरु अंत सुखद हरि धाम देत पहुँचाई ॥ कलियुग महँ इहइ अधार, न बिघन सतावैं। सहचरि करि-करि'''॥ १ ॥ सिय नाम प्रथम जब रहत कृपा उपजावत। तब जीवन के अपराध प्रभुहि बिसरावत ॥ पुनि पिय वश होइ निज आनँद सिंधु लुटावत। यक जीव कहा त्रय लोक सुखन सरसावत ॥ अस पुरुषकार सिय नाम सबहि अति भावैं। सहचरि करि-करि'''॥ २ ॥ पिय सर्व लोक शरणागत के प्रति पालक। जेहि काक जयन्त-विभीषण यश विस्तारक ॥ यहि बिधि बहु दीन-मलीन, धरम-पथ-घालक। होइ शरण कह्यो 'प्रभु पाहि' सबहि उद्धारक ॥ अजहूँ होइ शरण सभीत परम गति पावैं। सहचरि करि-करि'''॥ ३ ॥ पिय के दोउ काक-विभीषण शरण पुकारी। सिय

के निसिचरिन्ह न बचनहुँ बिधि अनुसारी ॥ तत्काल किये अपराध भयंकर भारी । मारुति सों करि प्रतिवाद करी रखवारी ॥ पिय सम्मिति करी लघुतरा 'मंजु' समुझावैं । सहचरि करि-करि प्रतिवाद'''॥४॥१४॥

रूपक मनहर

'मुकुट के रंगनि पर इन्द्र को धनुष वारौ''''' के तर्ज पर गा सकते हैं—

सुन्दर कपोलन पै अलकैं बिखरि रहीं, पान बीरी चाबते सुमंद मुसुकान पर । भृकुटि मरोर किये, नैन मैन सैन दिये, राम श्यामसुन्दर सु प्यारी अंस बाँह धर ॥ मधुर-मधुर बतरात रस बात कछु, दाहिने करनि सिय चिबुक परस कर । मंजुलता लखै पिय रहत अधीन सिया, छिन-छिन होत बलिहार मुख चंद्र पर ॥ १५ ॥

तथा

झूलत हिंडोल सोहैं, प्रीतम प्रिया के संग, आलियाँ झुलावैं दुहूँ ओर गहे डोरि कर । दामिनि दमंकि रही, पुरवा रमंकि रही, बरसै फुहार करैं पावस-बिहंग स्वर ॥ आली गन गान करैं त्यों उमंगि रंग ढरैं, प्यारी डरैं, डोरि धरैं, बरजैं निहोर कर । मंजुलता रोकि दोल, प्यारी जब मान कियो, प्रीतम मनावैं प्रिया, करनि चिबुक धर ॥ १६ ॥

धनाक्षरी (समस्यापूर्ति)

श्रुती में कही है परयंक विद्या जानै सूरि, आलीगन सेव्य राम नित्य मोद मोये हैं ॥ तिन्हीं को गुरुत्व अंश चल्यो मंत्रराज ब्याज, परंपरा द्वार पाय गुरू उर गोये हैं ॥ भव के जंजाल फँसे जीवन निहाल करैं, ढरैं जो प्रपन्न दीन जग्त राग खोये हैं ॥ सोई यहु रूपहू में प्रथम आवेश आनि, मंजु "पर्यङ्क पै निशंक प्रभु सोये हैं" ॥ १ ॥

मत्तगयंद—'घरनी को'

धाम तजै परिवार तजै सु बिराग सम्हारि तजै घरनी को । साधन साधि समादि चहूँ सु सजै हिय ज्ञान स्वरूपहिं ठीको । भक्ति करै

श्रवनादिकहूँ अरु प्रेमा परा में परा रति नीको ॥ जानु घुनाक्षर ही जब लौं अवलंब न राघव की घरनी को ॥ २ ॥

घनाक्षरी—देव 'रन में'

प्राकृतानि द्रव्य जोरि कर्म जो करै करोरि, तासु जनित लोक नाश देखिये विचारन में। विद्या बुद्धि शक्ति मितिवान अनुमान करो, अमित ब्रह्म आवै किमि तासु ज्ञान वारन में। त्यों हीं परिणाम शाली इंद्रिन अभ्यास जन्य, भक्ति किमि देवै अकल ब्रह्म मदहारन में। शक्तिवान प्रभुहिं विचारि निज रूप माहिं, तीनों सिद्ध होत मंजु राम शरन धारन में ॥ ३ ॥

अनंग शेखर छंद 'बनै नहीं'

विचारि काल अंग भोर साम को जड़त्व त्यों, सुमित्र शत्रु योग औ वियोग में सनै नहीं। सु कर्म जन्य तीनि ताप में भरी व्यथा कलाप, जानि राग त्याग संग मानि के भुनै नहीं। गुणै विकार काम क्रोध लोभ आदि को विचारि, डारिये गुणान पै सु आप में गुनै नहीं,। सबै विछेप को अधार जगत संग से विरागु, उत्तमा सु भक्ति मंजु राग में बनै नहीं ॥ ४ ॥

मनहर छंद—'अभिराम है'

काल जगजाल तासु फंद नास पूतना ज्यों, जीह जसुमति जीव-नंद सुख धाम है। करम मरम मूढ़ जीव जगजोनि जानि कर्त्तिताभिमान हर कृष्ण गुन ग्राम है। रज सुरराज साज हर गिरिराज व्याज, सत्त्व जमुना विवेक कंज नाग काम है। तामस वरुन फंद ध्वंसि कंस मन 'मंजु' साधक निवाज राम नाम अभिराम है ॥ ५ ॥

माधवी छंद—सिंहा० 'पर की'

भजु राम सरूप अनूप मुदा तजु आस सबै सुर की नर की। नरकी न चलै हरि की दृग पै लखु कौरव पाँडव के घरकी। घरकी दसकंध विभीषन की सुत औ हिरनाकुस आसुर की। सुर की हु सम्हार करै तेहि की लहि मंजु सु छाँह तजै परकी ॥ ६ ॥

रूपक मनहर छंद–सिंहा० 'पौरि पौरि'

पौरि पौरि श्रमित अमित काल भव सिंधु, सत्रु मित्र ग्राह मुँह बावैं खावैं दौरि दौरि। दौरि दौरि भ्रमत नमत मुनि सिद्ध साधु, बहुमत सुनति भ्रमति बुद्धि ठौरि ठौरि। ठौरि ठौरि प्रमुख प्रमान पोषैं निज मत, श्रम तरु सुफल लखावैं फरे घौरि घौरि। घौरि घौरि लोभ सु विचारि कलि तजै 'मंजु' राम द्वार भजहि तजहि आन पौरि पौरि ॥ ७ ॥